कुर्मी समागम सह चेतना शिविर

राजगीर (नालंदा), बिहार (भारत)

vkfindia1@gmail.com, support@thevkf.com www.thevkf.com

www.thevkf.com

छत्रपति शिवाजी

जीजाबाई

शाहू जी महाराज

सरदार पटेल

गुप्तनाथ सिंह

रामफल मंडल

वीरचन्द पटेल

गुरु सहाय लाल

राम स्वरूप वर्मा

देव शरण सिंह

दासु सिंह

लाल सिंह त्यागी

प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद

डा. रामराज प्रसाद सिंह

विविधता में एकता
एकता में प्रगति
आवाज़ दो हम एक हैं।

अतीत का सम्मान
वर्तमान का उत्सव
भविष्य का निर्माण

हमारा राजवंश

कुर्मी राजा चोलम प्रथम

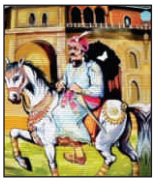
कुर्मी गौरव शहीद राजा जयलाल सिंह

श्रीमंत रानोजी राव शिन्दे

सम्राट मिहिरभोज

महाराज सयाजी राव गायकवाड़

राजा कृष्णदेव राय

छत्रपति शिवाजी महाराज

संभा जी महाराज

स्थान: राजगीर इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर

दिनांक: 10 एवं 11 फरवरी, 2025

Whatsapp & Call 6201652242

-: कार्यक्रम :-

दिनांक 10 फरवरी, 2025

प्रथम-सत्र

9.00 बजे सुबह - पटेल चौक पर सरदार पटेल जी की मूर्ति पर माल्यार्पण
09.30 से 10.30 - नास्ता- चाय- कन्वेशन सेंटर के सामने मैदान में
11.30 से 12.00 - उद्घाटन एवं अथितियों का स्वागत
12.00 से 02.00 - उद्बोधन, विषय:- हमारी ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि
02.00 से 03.00 - भोजन- कन्वेशन सेंटर के सामने मैदान में

द्वितीय-सत्र

3.00 से 6.00 - उद्बोधन, विषय:- हमारे पिछड़ेपन का कारण और निवारण
6.00 से 7.00 - चाय+भोजन
7.00 से 8.00 - अपने आवास स्थान पर वापस

दिनांक 11 फरवरी, 2025

प्रथम-सत्र

9.00 से 10.30 - नास्ता + चाय (कन्वेशन सेंटर के सामने मैदान में)
11.00 से 2.00 - उद्बोधन, विषय- आर्थिक सशक्तिकरण के श्रोत
2.00 से 3.00 - भोजन

द्वितीय-सत्र

3.00 से 5.00 - उद्बोधन, विषय- विश्व स्तर पर सामाजिक समन्वय की पहल एवं राजनीति में हमारी भूमिका
5.00 से 5.30 - समागम का सारांश
5.30 से 6.00 - प्रस्ताव एवं धन्यवाद ज्ञापन
6.00 से 7.00 - भोजन
7.00 से 8.00 - अवास स्थान पर वापस

कुर्मी समागम सह चेतना शिविर, राजगीर (नालंदा) बिहार

राजगीर में समागम का महत्व :-

राजगीर बिहार के नालंदा, जिले में स्थित एक ऐतिहासिक शहर है जो कई धर्मों का तीर्थस्थल एवं लोक प्रिय पर्यटन स्थल है। राजगीर का सम्बंध बौद्ध, महावीर एवं 20 वें जैन तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ स्वामी से रहा है। यहाँ प्राचीन मंदिर, गुफाएँ, शैल शिलालेख, बौद्ध खंडहर एवं प्राकृतिक गर्म झरने हैं। राजगीर प्राचीन मगध सामराज्य की पहली राजधानी थी।

राजगीर में स्वर्ण भंडार, राजगीर वाइल्ड लाइफ सफारी, विश्व शांन्ति स्तूप, सप्तपर्णी गुफा, पांडु पोखर, विरायतान जैन म्यूजियम, वेनु वन, राजगीर रोपवे ब्रह्मकुंड, ग्लास ब्रीज, साइक्लोपिन वाल, मनियार मठ, बिम्बिसार का जेल जैसे कई दर्शनीय स्थल हैं।

राजगीर को ज्ञान की धरती भी कहा जाता है। इसके पास ही नालंदा में प्राचीन विश्व प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय था जो खंडहर के रूप में आज भी मौजूद है। वर्तमान में राजगीर में ही नालंदा विश्वविद्यालय का नवनिर्माण कराया गया है। बुद्ध के परिनिर्वाण के पश्चात् उनके ज्ञान को संरक्षित करने एवं लोगों तक पहुँचाने हेतु चार संगीतियाँ (समागम) हुए जिसमें तीन बिहार के राजगीर, वैशाली और पाटलिपुत्र में हुए। पहला संगीति राजगीर में ही अजातशत्रु के शासन काल में हुआ जिसकी अध्यक्षता महाकश्यप ने किया था जो अपने समाज से थे। इसलिये राजगीर में इस विश्व स्तरीय समागम का विशेष महत्व है जिसमें भारत के विभिन राज्यों के साथ-साथ नेपाल से बड़ी संख्या में प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं।

समागम अपने गौरवमयी इतिहास से प्रेरणा लेकर वर्तमान एवं भविष्य की आर्थिक सामाजिक एवं राजनैतिक चुनौतियों पर चर्चा कर उसके समाधान ढूँढने के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर सामाजिक समन्वय स्थापित करने की पहल है।

दो दिवसीय समागम को कुल चार सत्र में बँटा गया है जिसमें सत्रवार निम्नलिखि विषयों पर चर्चा होना है:-

दिनांक 10 फवरी, 2025 प्रथम सत्र (11.00 बजे से 2.00 बजे तक)

विषय:- हमारी ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि

कहा जाता है कि जो अपना इतिहास भूल जाता है उसका स्तित्व मिट जाता है। अत: हमें अपने गौरपवूर्ण इतिहास से प्रेरणा लेकर वर्तमान एवं भविष्य की चुनौतियों का सामना भी करना है।

दिनांक 10 फरवरी 2025 दूसरा सत्र (3.00 बजे से 6.00 बजे तक)

विषयः- हमारे पिछड़ेपन का कारण और निवारण

हम आज भी पुरानी अवैज्ञानिक परम्पराओं, कुरीतियों एवं सामाजिक विखंडन के शिकार हैं। हमें एक जूट होकर आपसी समन्वय के साथ वैज्ञानिक सोच को अपनाकर नित बदलते वैश्विक एवं स्थानीय चुनौतियों का सामना करने की जरूरत है।

दिनांक 11 फरवरी, 2025 पहला सत्र (11.00 बजे सक 2.00 बजे तक)

विषयः- आर्थिक सशक्तिकरण के श्रोत

पारंपरिक तौर पर मुख्य रूप से कृषि ही हमारा आर्थिक श्रोत रहा है, लेकिन पारंपरिक कृषि आज हमारे लिये पर्याप्त आर्थिक श्रोत नहीं रह गये हैं। इसलिये हमें वैज्ञानिक कृषि एवं आर्थिक श्रोत के अन्य आयामों पर भी ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है। हमें अपनी सोच को बदलना होगा। शिक्षा के साथ-साथ व्यवसाय, व्यापार एवं उद्योग के तरफ हमें कदम बढ़ाने की जरूरत है।

दिनांक 11 फरवरी, 2025 दूसरा सत्र (3.00 बजे से 6.00 बजे तक)

विषयः- वैश्विक स्तर पर सामाजिक समन्वय स्थापित करने की पहल एवं राजनीति में हमारी भूमिका।

हमारी आबादी राष्ट्रीय स्तर पर सबसेअधिक है। लेकिन सच्चाई यह भी है कि हमारी उप-जातियों की संख्या भी सबसे अधिक है। भारत के बाहर नेपाल एवं अन्य देशों में भी काफी संख्या में हमारे लोग हैं। हमें आपस में समन्वय बनाकर एक सूत्र में बंधने हेतु एक मजबूत प्रणाली विकसित करने की जरूरत है।

सबसे बड़ी शक्ति सत्ता में निहित होती है। सत्ता तक पहुँचने का रास्ता राजनीति से होकर जाती है। इसलिये राजनीति में प्रभावी दखल हेतु हमें अपनी भूमिका पर भी विचार करने की जरूरत है।

कुर्मी समगम सह चेतना शिविर राजगीर में सभी स्वजनों का हार्दिक स्वागत है।

आयोजक मंडल

कुर्मी समगम सह चेतना शिविर,
राजगीर (नालंदा), बिहार